शीर्षक - शरणागत - वृन्दावनलाल वर्मा

पात्र - रज्जब कसाई
- ठाकुर - ठाकुर को लोग राजा के नाम से पुकारते थे।

इस कहानी का निचोड़ यह है कि ठाकुर (क्षत्रीय, राजपूत) अपने शरण में आए हुए व्यक्ति की हर तरह से रक्षा करना चाहते हैं। रज्जब कसाई के पास रुपये थे। पत्नी के बीमार होने तथा लड़का होने के कारण वह ठाकुर के यहाँ शरण लेने गया था। ठाकुर के आदमी रज्जब का पीछा करते हुए उसके दरवाजे तक आ गया। ठाकुर ने रात भर उसको अपने शरण में रखा। सुबह में जबर्दस्ती उसे चले जाने को कहा। बीमार पत्नी को लेकर रज्जब जाना नहीं चाहता था। बाध्य किये जाने पर वह किराये की बैलगाड़ी लेकर चल पड़ता है। एक बगीचे में उसको लुटेरों घेर लेते हैं। अंधेरा हो चला था। लुटेरा उसका नाम पूछ रहा था। उसने जब अपना नाम बताया तब उसके एक साथी ने कहा वह शरणागत है, उसे छोड़ दो और गाड़ीवान से कहा इसे ललीतपुर पहुँचा के ही लौटना। गाड़ी चल पड़ी। अन्य साथियों ने उस व्यक्ति से कहा अब कल से तुम्हारे साथ इस धन्धे में नहीं आऊंगा। तब उस व्यक्ति ने कहा "कुन्देला" अपने शरण में आए हुए व्यक्ति को हर तरह से रक्षा करना जानता है। कहानी यहीं समाप्त हो जाती है।

Scanned with CamScanner